Item Code: 642 Participant Code: 033

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം, തൃശൂർ
തീയതി..........
★ പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി ★

"मैं कौन हूँ ?"

आनू ने अचानक से कमरे का दरवाज़ा बंद करा और फूट-फूट कर रोने लगी। और रोये भी क्यू नहीं क्युकि उसके मम्मी पापा उसे बिलकुल भी नहीं ~~समजाते~~ समजथे। आनू का असली नाम अनाया है और सब लोग उसे प्यार से आनू बुलाते हैं। उसकी एक छोटी बहन है सोहर और एक भाई भी है जिसका नाम आदि है। दोनो ही एक-झुट हो जाते हैं अनाया को परेशान करने के लिये। और जब दोनो हद से ज़्यादा परेशान करने लगे तो आनू दोनो को पकड़ के मारती है फिर दोनो रोने लगते हैं और अगर मम्मी ने उनको रोते हुए देख लिया फिर आनू को मारती है यह कहकर की

"बड़ी बहन अपने से छोटा को नहीं मारती है अगर छोटा ने अपनी बड़ी दीदी को मार भी लिए तो क्या थोड़ा तो बड़ी बहने सहन कर लेती है।" लेकिन पापा इस बात से ~~बीलक~~ बिलकुल भी सहमत नहीं थे। पापा हमेशा कहते ~~थे~~ है कि "अगर छोटे एक मारे तो बड़ो को दो मारने चाहिए अगर बड़े ऐसा नहीं करें तो छोटे सीर पर बैठ जाएगें"। इसलिए आनु थोड़ी शांत थी लेकिन यह बताने के लिए हमेशा तो पापा नहीं मिलेगें, पापा को भी तो अपना काम देखना ~~है~~ है। आज पापा घर पर नहीं थे इसलिए आनु रो रही थी। अगले दिन आनु घर झाड़ू लगा रही थी सबकुछ अच्छा चल रहा था तभी मम्मी को एक फोन आया मम्मी सारा काम छोड़कर भाग पड़ी आनु डर गयी और

वह भी भाग पड़ी। गली में एक गाड़ी आयी और उसमें से पापा बाहर निकले वह देखकर आनु रो पड़ी पापा कि आँख में एक मोटी सी पट्टी थी। मम्मी ने पापा से पूछ की क्या हुआ तभी पापा बोले "आँख में सरिया घुस गयी इसलिए आँख में पट्टी है। आनु ने पूछा की "कितनी लगी है?" पापा ने कुछ नहीं बोला इसलिए आनु ने फिर से पूछा पापा ने बोला "आँख की पलख कट गयी है अगर थोडी सी और खीच जाती तो पलख ही कट जाती" आनु के आँख में से आँसु ऐसे निकल रहे थे कि मानो बहुत महिनों से नहीं निकले थे और आज ही सब निकल गये। आनु ने जैसे-तैसे करके अपने-आप को काबू में किया। उसी रात आनु के स्कूल में-सी एक फोन आया

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം, തൃശൂർ
തിരുത്തി.....................
പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

Item Code: 642 Participant Code: 033

वह फोन आनु के स्कूल का
फोन था और स्कूल के प्रिनसीपल
बात कर रहे थे। उसे लगा की
कुछ कहना चाहते है उसके प्रिनसीपल
आखीर में प्रिनसीपल बोले "पापा कैसे
है?" तो आनु ने थोड़ा पहले पूछा
कि "आपको कैसे पता?" तो उन्हों ने
बोला की "जिस अस्पताल में तुम्हारे
पापा आये थे उधर हि मेरी आँख
के चेकप के लिए मैं आया था।"
तो आनु ने बोला "अभी पापा
ठीक है।" प्रिनसीपल ने उसकी नई
टीचर का नंबर दिया और बोला कि
"तुम इन्से बात करो और चाहो
तो कुछ दिन की छुट्टी ले सकती
हो।" आनु ने ठीक है कहकर कॉल
काट दि और उसके नई टिचर से
बात की और सबकुछ बता दिया।
उसकी नई टिचर का नाम आतिरा था।

आतिश स्कूल में आज ही आया है। और वह स्कूल का सबसे छोटा टिचर है। उसको आनु की पीढ़ा देख कर बहुत दुख हो रहा था। आनु के पास अपना खुद का फोन था। और आनु को पढाई बहुत शौक हमेशा से है। आनु की रिपोट कार्ड देखकर आतिश को यह समज आगया था कि आनु बहुत अच्छी लड़की है और पढाई में बहुत अच्छी है। आतिश को थोडा बुरा और लग रहा था कि इतनी अच्छे से पढाई करने वाली लड़की की पढाई छूट रही है इसलिए आतिश ने फैसला किया की वह आनु को फोन से सारी नोटस देगा। उसने आनु को अपने इस विचार के बारे में बताया और आनु भी सहमत हो गयी। इसे उन दोनो ने अपनी पढाई फोन

से शुरू की। आनू की पढाई अच्छी चल रही थी की उसकी बहन उसकी और आतश की पढाई को कुछ और ही बोल रही थी। आतश बीच बीच में उसके पापा के बारे में पूछता था। और कभी कभी आनू खाना नही खाती थी तो आतश उससे बोला की "खाना खाओ।" आनू को आतश एक अच्छे दोस्त जैसा था और कभी कभी पढाई के अलाव वह कुछ और भी बात करते जैसे आनू के रिश्तेदार और परीवार। आनू ने बताया की उससे कोई भी बात नही ~~करता~~ करता है। और कुछ देर बाद आनू रोने लगी। जब आतश को कोई मेसेज नहीं आया तो उसने आनू को कॉल किया। कॉल में आनू रो रही थी। आतश घबरा गया और पूछ कि "क्या हो गया कि, अचानक से क्यू रोने

लगी हो?" तब आनु ने कहा की "मेरी वजह से उसके पापा से ~~उ~~ उसके परीवार वाले बात नही करते।" "क्यों?" आतश हैरान होकर बोला। "मुझे पापा के परीवार वाले पसंद नहीं वह हमेशा मेरी मम्मी की बेज़्जती करते है और पापा से भी अच्छे से बात नही करते इसलिए अगर वह मुझसे बात करे तो मैं भी बात नहीं करती और इसलिए पापा उनसे बात नहीं करते ~~की~~ यह समजकर की वह मुझसे सीधी तरह बात नहीं करते। पापा को कोई अगर अच्छे से बात नही करे तो कोई फरक नहीं पड़ेगा लेकिन अगर कोई मुझसे अच्छें से बात नहीं करें तो पापा उनसे बात नही करते।" ऐसे आनु ने अपने बारे में आतश को सब बताया। ऐसे एक महीना खत्म हो गया और अब अनाया स्कूल भी

जाने लगी। एक दिन आनू स्कूल से आ रही थी अपने घर तभी उसकी सबसे अच्छी दोस्त शीफा आकर उससे बात करने लगती है। शीफ आनू की पडोसी है और वह दोनो एक साथ स्कूल आते-जाते है। शीफ आनू से कहने लगी की "तुम आज कल पढ़ाई नहीं करती क्या?" आनू ने कहा "क्यू? क्या हूआ?" शीफ ने कहा की "तुम्हारी मम्मी ने मुझे बताया की तुम किसी काम की नहीं हो! और अब तो फोन मे कुछ ज़्यादा ही घुस रही हो! नाही कोई घर का काम करती हो और नाही अब पढाई करती है। तुम्हारी मम्मी मुझसे कहती है कि तु किसी काम की नहीं है। एकदम बेकार है तु।" पता नहीं क्यू लेकिन आनू को यह बात बहुत ही ज़्याद दुख

दे रही थी। जब वो घर आयी तो
मम्मी भी अचानक से गुस्सा करने
लगी यह कह कर कि "महारानी को
क्या चाहिये आप बस हुकूम दो।"
आनु को कुछ समज नही आया
आनु ने पूछा की "क्या हुआ मम्मी
आज आप ऐसा क्यू बोल रही हो?"
तो मम्मी ने बोला "बेचारी हर काम
कर के जाती है ना जो अभी स्कूल
से आकर थक गयी और घर पर
लेट गयी। तू किसी काम की नही है।
तू बस हमारे लिए एक बोज है।"
आनु रोने लगी तो उसके भाई और
बहन हसने लगे तब वह कमरे में
जाकर रोने लगी और आनश को
सब कुछ बताया और कहने लगी
कि कोई भी मुझे प्यार नहीं
करता कोई मुझे समजता नही। मैं
किसी काम की नही।" आनश को

यह सब सुनकर बहुत बुरा लगा
और बोला की "क्या मैं तुमसे
प्यार नहीं करता?" यह सुनकर आनु
बिलकुल शांत हो गयी और फिर से
आतशा बोलने लगा "अगर तुमसे कोई
प्यार नहीं करता और अगर तुम
कोई काम की नहीं हो तो फिर
ऊपर ~~ब वाले~~ वाले ने तुम्हें यहाँ
धरती पर क्यू बेजा?" यह ~~सुन~~ सुनकर
आनु मन में सोचने लगी की "आखीर
मैं कौन हूँ?" "अगर मैं किसी के
काम नहीं आती तो मुझे ऊपर वाले
ने ~~ब~~ भेज ही क्यू होगा" तब से
आनु ने यह समजा की अभी तक
वह अपने-आप को बिलकुल भी
नहीं समज पायी थी। उसके पास
बहुत सारे हुनर है लेकिन वह
अपने-आप को नहीं समज सकी। और
आज आतशा की ~~ब~~ वजह से उसने

अपने आप को समज पाई। भले ही आतश आनू का गुरु था लेकिन उसने एक बहुत अच्छा दोस्त बनकर आनू को समजाया। तभी से आनू को आतश से प्यार हो गया। और एक दिन आनू ने आतश को अपने दिल की बात बता दी और आतश ने भी उसे "हाँ" कह दी। अब वह दोनों हर रोज़ बात करते फोन में। एक दिन आनू ने सोचा की अगर पापा को आनू और आतश के बारे में पता चला तो बहुत बुरा लगेगा इसलिए आनू ने आतश को एक चिट्टी लिखी :-

"ऐसा पहली बार हुआ था इतने सालों में कि आज तक अंदेख अंजान आने लगाता ख्यालों में वह सिर्फ आप हो आतश, आँखों की खिड़की पर एक साया सा

लहराता था और दिल के दरवाज़े पर दस्तख दे जाता था। गहरी काली आँखें मुझसे पूछती है की कौन है जो मेरी हर दुख-तकलिफ समजता है। हर समय मैं अपने आप से पूछती हूँ कि कौन है जो मुझे समजता है। इतनी भरी दुनिया है उसमें सिर्फ वही था जिसने मुझे समजा है।" इस एक चिट्टी में आनु की हर भावना है। यह चिट्टी आनु ने लिखी तो थी लेकिन भेजने की हिम्मत कभी नहीं हो पई। आनु को इस बात कि खुशी थी की उसने अपने-आप को समजा और "मैं कौन हूँ?" का जवाब भी मिला। कुछ लोगों को अपनी ज़िन्दगी को नहीं समज पाते। कि वह कौन है। लेकिन कुछ लोगों को अपने-आप को समज जाते है।